गन्ना कृषक माह अप्रैल में क्या करें!

1– फरवरी माह में बोयी गयी फसल में इस माह (60 दिन पर) सिंचाई उपरान्त 50 कि0ग्रा0 नत्रजन/हे0 (110 कि0ग्रा0 यूरिया) की टॉप ड्रेसिंग करें तथा गुड़ाई करें। शरद्कालीन गन्ने में यदि यूरिया की टाप ड्रेसिंग अवशेष हो तो 60 कि0ग्रा0 नत्रजन/हे0 (132 कि0ग्रा0 यूरिया) की उपरोक्तानुसार टॉपड्रेसिंग करें।

2– शरद्कालीन गन्ने के साथ यदि अन्तः फसलें ली गयी हों तो अप्रैल–मई में उनकी कटाई उपरान्त तत्काल सिंचाई कर यूरिया की टॉपड्रेसिंग करें व गुड़ाई करें। यदि दो थानों के मध्य रिक्त स्थान (45 से0मी0) है तो पूर्व अंकुरित पैड़ों की रोपाई करें।

3– बावग गन्ने की कटाई उपरान्त यदि उसकी पेड़ी रखनी हो तो गन्ना कटाई के समय ध्यान देना चाहिये कि केवल गन्ना ही काटें तथा देर से निकले किल्लों को छोड़ दें। सूखी पत्तियों को समान रूप से बिखेरकर सिंचाई करें तथा सूखी पत्तियों पर लिण्डेन धूल 1.3 प्रतिशत का 25 कि0ग्रा0/हे0 की दर से धूसरण करें। सिंचाई से पूर्व गैप फिलिंग करें तथा 90 कि0ग्रा0/हे0 नत्रजन (200 कि0ग्रा0 यूरिया) की जड़ के पास प्रयोग करें।

4– फरवरी–मार्च में रखे गये पेड़ी गन्ना में काला चिकटा नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 का 1.0 ली0 दवा के साथ 3 से 5 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें।

5– चोटीबेधक व अंकुर बेधक से ग्रसित पौधों को पतली खुरपी से भूमि की सतह से काटकर निकाल लें तथा उन्हें नष्ट करें।

6– गेहूँ, चना, मटर, मसूर आदि के बाद यदि गन्ना बोना हो तो तत्काल सिंचाई कर ओट आने पर खेत तैयार कर बुवाई करें। बीज गन्ना यदि सम्भव हो तो ऊपरी 1/3 भाग का ही प्रयोग करें। बीज गन्ना को पानी में कम से कम रात भर डाल दें। दो या तीन ऑख के टुकड़े एम0ई0एम0सी0 से उपचारित कर 60 से0मी0 की दूरी पर पंक्तियों में बोयें।

7– भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाये रखने तथा उर्वरक व्यय में बचत हेतु सिंचाई उपरान्त 10 कि0ग्रा0 *एजोटोबैक्टर* व 10 कि0ग्रा0 *पी0एस0बी0*/हे0 का प्रयोग जड़ के पास कर गुड़ाई करें।

8– खरपतवार नियंत्रण हेतु कस्सी, फावड़े या कल्टीवेटर से गुड़ाई करें।

9– प्रत्येक 15–20 दिन पर आवश्यकतानुसार 3–4 पानी लगायें। हल्की व कम अन्तर पर सिंचाई अपेक्षाकृत उपयोगी होती है।

पेड़ी में बावग सा ध्यान। तब होगा अपना कल्यान।।